त्रिपुरी के कलचुरि कालीन आर्थिक अवस्था

कैलाश मेन्ढ

प्राचीन समय से ही भारत गाँवों में ही बसता था। अभिलेखों में गाँवों के लिए 'ग्राम' शब्द का प्रयोग हुआ जो राज्य की सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई थी। ग्रामों का आकार–प्रकार छोटा या बड़ा क्यों न हो, इसकी जनसंख्या कम या अधिक क्यों न हो इससे प्राप्त राजस्व धन कुछ भी क्यों न हो, ग्राम ग्राम ही कहलाता था। इस प्रकार की अवधारणा कलचुरियों के काल में भी प्रचलित थी।

कलचुरि काल में आर्थिक संरचना, कृषि प्रधान थी। अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती थी। उनके प्रमुख जीवकोपार्जन का साधन कृषि उपज थी। इसके अतिरिक्त इस काल में कृषि राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था। कृषि करने का ढंग पारम्परिक था, अर्थात हल तथा बैलों के माध्यम से जुताई होती थी तथा हँसिये से कटाई की जाती थी। अभिलेखों में खलिहानों में अन्न संग्रह का कार्य करने का वर्णन है। अन्न निकालने, भूसा अलग करने के आदि के कार्य भी परंपरागत रूप से सम्पन्न किये जाते थे।